हिंदी प्रसून-7

1. और भी दूँ

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (i)

2. (क) मस्तक (ख) बूँद (ग) संतुष्ट (घ) मोह

3. (क) धरती हमारा पालन-पोषण करती है इसीलिए उसे माँ शब्द से संबोधित किया गया है। उसने हमारे पालन-पोषण के लिए बहुत-सी चीजें दी हैं। अत: हम उसके ऋणी हैं।

(ख) कवि देश की धरती के लिए अपना तन-मन-जीवन समर्पित करना चाहता है, क्योंकि वह उसकी मातृभूमि है और अपनी मातृभूमि की रक्षा करना हम सबका परम कर्त्तव्य है।

(ग) कवि थाल में भाल सजाकर लाने को कह रहा है।

(घ) कवि अपनी मातृभूमि के लिए मोह के बंधन से मुक्त होने का इच्छुक है।

(ङ) कवि मातृभूमि की रक्षा के लिए तलवार माँजने की बात कर रहा है

(च) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) लाऊँ सजाकर (ख) माँज दो, लाओ

(ग) मल दो (घ) दे दो

(ङ) थमा दो

5. जब भी थाल में अपना मस्तक सजाकर लाऊँ तो उसे स्वीकार कर लेना। मैं अपनी उम्र का एक-एक क्षण वतन के लिए समर्पित करना चाहता हूँ।

6.

(क) धरती	— भू	धरा	पृथ्वी
(ख) भाल	— मस्तक	ललाट	सिर
(ग) ऋण	— कर्ज	उधार	देनदारी
(घ) घर	— भवन	आँगन	सदन
(ङ) सुमन	— पुष्प	फूल	कुसुम
(च) जल	— पानी	नीर	वारि

7. (क) आकाश (ख) उल्टे (ग) काँटे (घ) मरण (ङ) जल्दी

8. (क) धरती — धरती गोल है।

(ख) मोह — बच्चों का मोह छोड़कर देश की रक्षा करो।

(ग) ध्वज — हिमालय के उच्च शिखर पर ध्वज फहरा दो।

(घ) ऋण — माँ का ऋण कभी नहीं चुकाया जा सकता।

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें। **12.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें। **14.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

2. झूठ का सच

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv)

2. (क) गोनू झा मित्रों के सामने तगादा इसलिए करता था ताकि वक्त पड़ने पर वह उनको गवाह बना सके।

(ख) मित्र को गोनू झा के द्वारा रोज-रोज तगादा करने की बात से खीज होती थी।

3. (क) 3 (ख) 6 (ग) 1 (घ) 2
(ङ) 5 (च) 4

4. (क) गोनू झा ने मित्र से मिट्टी के एक हजार सिक्कों की माँग की।

(ख) गोनू झा के मित्र ने उससे उत्सुकता से पूछा कि मित्र, मेरे बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।

(ग) गोनू झा ने पंचों के सामने फरियाद की, ''यह मेरा लँगोटिया यार है; इसने मुझसे एक हजार सिक्के शीघ्र लौटाने की शर्त पर छः महीने पूर्व लिए। पाँच सौ सिक्के तो शीघ्र ही लौटा दिए और शेष से मुकर रहा है।''

(घ) गोनू झा दोस्तों के सामने मित्र को पाँच सौ सिक्कों के बाकी रहने की याद दिलाते थे।

(ङ) मित्र गोनू झा का नाम सुनकर इसलिए भड़क उठता था, क्योंकि उसे पंचों के सामने मिट्टी के पाँच सौं सिक्कों के स्थान पर असली के सिक्के लौटाने पड़े थे और साथ ही बदनाम और बेइज्जत भी होना पड़ा था।

(च) बटुआ दिखाकर गोनू झा इस सत्य को सिद्ध करना चाहता था कि वास्तव में मित्र के और मेरे बीच जो बात हुई थी उस बात का यह बटुआ प्रमाण है।

(छ) गोनू झा के मित्र का माथा इसलिए उनका कि फिर वह उसके साथ कोई खुराफात तो नहीं करने वाला है।

(ज) गोनू झा ने अपने और मित्र के बीच हुई बातचीत और सिक्कों की सच्चाई का भेद खोलने तथा मित्र के मन की मलिनता को साफ करने के लिए मित्र की दुकान पर गणमान्य व्यक्तियों को बुलाया।

❒ व्याकरण-बोध

5.

तत्सम	**विदेशी**	**देशज**
शंका	अजीज	लँगोटिया
बद्धमूल	फरियाद	बटुआ
मति	बावजूद	स्वाँग

6. (क) ही (ख) भी (ग) भर (घ) मात्र
(ङ) भी (च) तो

7. 1. अध्यापक ने पाठ पढ़ाया। 2. चित्रकार ने चित्र बनाया।
3. विद्यार्थियों ने गृहकार्य कर लिया। 4. मोहन ने मैच जीता।
5. निशा ने गीत गाया।

8. (क) कैसा-कैसा — बाहर चलकर पता करो कि लोग कैसा-कैसा बरताव करते हैं।
(ख) जब-जब — मैं जब-जब तुम्हारे घर जाता हूँ, तुम गायब ही रहते हो।
(ग) बदले-बदले — मोनू आज क्या बात है? बहुत बदले-बदले नजर आ रहे हो।
(घ) कभी-कभी — कभी-कभी तो सबसे गलती होती है।
(ङ) रोज-रोज — रोज-रोज दुकान में लाइन लगानी पड़ती है।
(च) ना-ना — कन्हैया के ना-ना करने के उपरांत भी गोपिकाओं ने उन्हें रँग डाला।

9. ना नासमझ, नापसंद
बे बेहिसाब, बेदखल
बा बाकायदा, बाइज्जत
बद बदमाश, बदसूरत

❒ योग्यता-विस्तार

10. विद्यार्थी स्वयं करें। **11.** विद्यार्थी स्वयं करें। **12.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें। **14.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

3. सिंदबाद

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii)

2. (क) गठरियाँ कई थीं। एक में सोने के सिक्के बँधे थे।
(ख) सिंदबाद को सोना स्मगलर समझकर घेर लिया गया था।
(ग) सिंदबाद को कस्टम अधिकारी पुलिस स्टेशन ले जा रहे थे।

3. (क) सिंदबाद की प्रसिद्धि का कारण उसका व्यापार था
(ख) पहले सफर में जहाज के कप्तान ने सिंदबाद को बहुत बड़े कछुए की पीठ को एक टापू समझकर उस पर उतार दिया था।
(ग) एयर टर्मिनल पर सिंदबाद अपने सामान का इंतजार कर रहा था।
(घ) सिंदबाद ने हवाई यात्रा का निर्णय इसलिए लिया जिससे कि हिंदुस्तान के लोग उसे निहायत पिछड़ा हुआ न माने। दूसरे, अपनी पहली यात्रा जैसी मुसीबत से बचने के लिए।
(ङ) कुली द्वारा बख्शीश माँगने पर सिंदबाद को यह हैरत हुई कि हिंदुस्तान का आदमी भिखमंगा कैसे हो गया! यह तो 'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाला देश है।
(च) होटल में सिंदबाद के साथ यह हुआ कि जब उसने वहाँ प्रवेश किया तो गलती से उसका हाथ एक बटन पर पड़ गया और अचानक आवाज गूँजने लगी। सिंदबाद घबरा गया। उसने कमरे में लगे सारे बटन दबा दिए। किसी से बत्ती जली, किसी से पंखा चला, किसी से घंटी बजी तो किसी से एयरकंडीशनर चला। सिंदबाद पसीने-पसीने हो गया। दहशत के मारे चेहरा सूख गया। बैरे ने आकर स्विच बंद किए। सिंदबाद खिसियाना होकर तौलिए से अपना मुँह पोछने लगा।
(छ) सिंदबाद ने भारत से वापस जाने का कारण हिंदुस्तान की तरक्की बताया।
(ज) प्रौद्योगिकी इतनी आगे बढ़ चुकी है कि इंसानों की जगह मशीनें लेती जा रही हैं। मेरे विचार से एक समय ऐसा आएगा कि जब सभी कार्य मशीनों से ही होंगे। परिणाम यह होगा कि बिना मशीन के व्यक्ति साँस तक नहीं ले सकेगा और बेमौत मारा जाएगा।
(झ) सिंदबाद के छूटे हुए सामान को लेकर टैक्सी वाले के मन में यह नैतिक विचार आया कि यह सामान वह पुलिस स्टेशन में जमा कर दे तथा अनैतिक विचार यह आया कि यदि वह इसे न जमा करे और सारा सामान घोट जाए तो किसी को क्या पता चलेगा। यदि मैं उसकी जगह होता तो मैं भी सारा सामान पुलिस स्टेशन पर पहुँचाता जिससे उसका सामान उस तक पहुँच सके, क्योंकि मैं अपने देश का नाम गंदा नहीं होने देता।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) धनवान (ख) रँगीला (ग) वैज्ञानिक (घ) प्राकृतिक
(ङ) ममेरे (च) दार्शनिक

5. (क) प्रमाणसहित बातें किया करो।
(ख) मेरी बात को सुनो तो सही।
(ग) सब्जी में मिर्च मिलाओ।
(घ) सभा में अनेक लोग बैठे थे।
(ङ) गाय का शुद्ध दूध लाओ।
(च) रामू को आम काटकर प्लेट में रखकर दो।

❐ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें। **7.** विद्यार्थी स्वयं करें। **8.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

4. बूढ़ा कुत्ता

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (ii)

2. (क) (2) (ख) (4) (ग) (5) (घ) (1) (ङ) (3) (च) (6) (छ) (7)

3. (क) **भाव**—लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक कुत्ता छोटा पिल्ला था तो उसकी हमें सुरक्षा करनी पड़ती थी, किंतु जवान और सबल हो जाने पर आज वह हमारी सुरक्षा करने लगा है।

(ख) **भाव**—लेखक कुत्ते को एक वीर योद्धा यानी अभिमन्यु की उपमा देते हुए कहता है कि जिस प्रकार वीर अभिमन्यु सारे योद्धाओं को पराजित करते हुए चक्रव्यूह के सातवें द्वार तक पहुँच गया था उसी प्रकार उसका कुत्ता भी सारी बाधाओं को पार कर सुबह तक घर आ गया।

4. (क) कुत्ते से लेखक का परिचय तब हुआ जब वह पिल्ला था और कहीं से भटककर चैत की दोपहर में घायल अवस्था में लेखक की खाट के नीचे आ गया था।

(ख) गाँव के कुत्तों का व्यवहार इस कुत्ते के प्रति शुरू-शुरू में बुरा रहा किंतु बाद में अच्छा हो गया।

(ग) बूढ़े कुत्ते की दशा बहुत बुरी हो गई थी। सारे शरीर में खौरा लग गया था, जिसे पंजों से खरौंदकर उसने घाव कर लिए थे। उससे बदबू आने लगी थी। वह सारा सम्मान खो चुका था।

(घ) खेत में बने लेखक के घर की रखवाली कुत्ता बड़ी वफादारी से सारी रात एक संतरी की तरह जागकर करता था।

(ङ) लोग बूढ़े कुत्ते के साथ बड़ा ही बुरा व्यवहार करते थे। उसे बार-बार दुत्कारा-फटकारा जाता था। इस पर भी न भागने पर उसकी झाड़ू और डंडों से पिटाई की जाती थी।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) टूट पड़े (ख) घोड़े बेचकर सोने लगे

(ग) आँखों से ओझल हो गया (घ) गला फाड़कर चिल्लाने लगा

(ङ) नाम न लेना

6. (क) हिंसा—अहिंसा | नश्वर—अमर
(ख) सगुण—दुर्गुण | पवित्र—अपवित्र

7. नजदीक — पास | आवाज — ध्वनि
बरबाद — तबाह | जख्म — घाव
हिम्मत — साहस | हालत — स्थिति

8. दुत्कार-फटकार—दुत्कार और फटकार | आती-जाती—आती और जाती
मोटा-ताजा—मोटा और ताजा | दिन-रात—दिन और रात
दही-भात—दही और भात | करुण-सजल—करुण और सजल

9. **अकर्मक क्रिया के वाक्य**—1. शरीर से बदबू आती है।
2. यह बैठ जाता है।
सकर्मक क्रिया के वाक्य—1. समूची देह में खौरा लग गया।
2. मैं भी खाट पर सो गया।

10. (क) बाहर (ख) नीचे (ग) पीछे-पीछे (घ) धीरे-धीरे
(ङ) थोड़ा (च) घबराकर (छ) अचानक

❒ योग्यता-विस्तार

11. विद्यार्थी स्वयं करें। 12. विद्यार्थी स्वयं करें। 13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

14. विद्यार्थी स्वयं करें। 15. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

5. लीक पर वे चलें

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iii)

2. **भाव**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि पहले से बने हुए रास्तों का अनुसरण वही व्यक्ति करते हैं जिनके पैर कमजोर और थके होते हैं। हमें तो हमारी यात्रा से बनने वाले रास्ते ही प्यारे हैं। बाँस के झुरमुटों से बाधित रास्ते और उन पर बहने वाली हवा ही हमारी यात्रा के साक्षी हैं, क्योंकि हमारी उम्मीदें उन्हीं से बँधी हुई हैं। तात्पर्य यह है कि साधारण तथा डरपोक व्यक्ति ही पुरानी परंपराओं का अनुसरण करते हैं, किंतु साहसी व्यक्ति अपना रास्ता स्वयं बनाते हैं। उनके जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ ही उनका उत्साहवर्धन करती हैं।

3. (क) कवि थके हुए तथा कमजोर पैरों वाले व्यक्तियों को लीक पर चलने के लिए कह रहा है।
(ख) कवि को स्वयं की यात्रा से बनने वाले अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

(ग) कवि ने अपने द्वारा बनाए मार्गों का साक्षी पीले बाँस के झुरमुट और उन पर बहती हवा को बताया है।
(घ) कवि ने ताड़ के पेड़ों की तुलना हिलती क्षितिज की झालरों से की है।
(ङ) कवि अपने संकल्प के सहारे जीवित है।
(च) कवि के सपने पीले बाँस के झुरमुट से लिपटे हैं।

❒ व्याकरण-बोध

4. सम् कल्प ना संकल्पना दूर् बल ता दुर्बलता

5. वाद्य—व् आ द् य् अ
अल्हड़—अ ल् ह् अ् ड़् अ
दुर्बल—द् उ र् ब् अ ल् अ
मंडली—म् अ ण् ड् अ ल् ई

6. (क) डाल पर पक्षी चहचहा रहे हैं।
(ख) कवि को स्वयं बनाए मार्ग प्यारे हैं।
(ग) रात मैंने एक डरावना सपना देखा।
(घ) जो गर्व से आसमान थामे खड़े हैं।
(ङ) नदी का स्वच्छ जल ही मनुष्य को जीवन देता है।
(च) डाकू गौतम बुद्ध के पैरों में गिर गया।

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें। **8.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

6. समय-नियोजन

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. (क) गांधीजी के पास लोगों का ताँता लगा रहता था। बड़ी-बड़ी सभाओं में उन्हें शामिल होना पड़ता था, किंतु फिर भी वे अपने प्रत्येक कार्य के लिए समय निकाल लेते थे। लेखक ने इसीलिए कहा है कि गांधीजी कम व्यस्त नहीं रहते थे।
(ख) गांधीजी जो कार्य करते थे वे इस प्रकार हैं—दार्शनिकों से मुलाकात करना, देश-विदेश के पेचीदा मामलों में विचार-विनिमय करना, अखबारों के लिए लेख लिखना, प्रात: भ्रमण करना तथा पत्रों के लिए जवाब हाथ से लिखकर देना।

(ग) गांधीजी अपने पत्रों के जवाब हाथ से लिखकर इसलिए देते थे, क्योंकि उस समय मशीनों (कंप्यूटर आदि का) इतना विकास नहीं हुआ था।

(घ) गांधीजी के जिन दो कार्यों का समय हमेशा निश्चित रहता था, वे हैं—1. प्रार्थना-सभा में शामिल होना तथा 2. प्रातः भ्रमण करना।

3. (क) **भाव**—जो व्यक्ति समय को पहचानता है, उसकी कद्र करता है वही व्यक्ति जीवन में सफलता हासिल कर सकता है। इसलिए समय का पालन करो। उसके साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने का प्रयास करो।

(ख) **भाव**—समय और लहरें किसी का इंतजार नहीं करती। जो समय एक बार निकल गया वह दोबारा नहीं आता। लहरें भी कभी पीछे नहीं मुड़तीं। अतः समय और लहरों के बहाव को जानो।

4. (क) लेखक के अनुसार व्यायाम, चिंतन तथा अध्ययन को समय देकर ही हमारा तन-मन स्वस्थ और सबल बनता है।

(ख) गांधी जी समय-नियोजन के द्वारा व्यस्तताओं के बीच भी पत्रों के उत्तर देते थे।

(ग) हमारे अनुसार, गांधीजी और नेहरू जी समय का उचित विभाजन करके सभी काम समय से पूर्ण करते थे।

(घ) साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना विद्यार्थियों के लिए इसलिए आवश्यक है ताकि वे एक अच्छे नागरिक बनकर जीवन में सफलता हासिल कर सकें।

(ङ) विद्यार्थी-जीवन में समय-नियोजन को कई कारणों से महत्त्व दिया गया है—

1. उन्हें एक लंबा जीवन जीना है।
2. सफलता की ऊँची-ऊँची मंजिलें तय करनी हैं।
3. विद्यार्थियों को जो आदतें पड़ जाती हैं वे जीवन-पर्यन्त बनी रहती हैं।

(च) लेखक ने धन की अपेक्षा समय को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है, क्योंकि धन तो आता-जाता रहता है, किंतु समय फिर वापस नहीं आता।

(छ) समय-सारणी बनाने से यह लाभ होता है कि सभी काम समय से पूर्ण हो जाते हैं और साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा खेल-कूद आदि के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है।

(ज) मनुष्य जीवन में सुख, समृद्धि और शांति की कामना करता है, जो उसे निरंतर प्रयास करने पर ही मिल सकती हैं।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) (iii) (✓) (ख) (i) (✓) (ग) (iv) (✓) (घ) (ii) (✓)

6. (क) दैनिक (ख) समय-नियोजन (ग) समयाभाव
(घ) विद्यार्थी (ङ) प्रधानमंत्री (च) जीवनपर्यंत

7. (क) ठीक (रीतिवाचक) (ख) कोने-कोने से (स्थानवाचक)

(ग) पर्याप्त समय (कालवाचक) (घ) प्रात:काल (कालवाचक)

(ङ) न जाने कहाँ (रीतिवाचक)

8. (क) संबंध कारक (ख) करण कारक (ग) संप्रदान कारक

(घ) कर्म कारक (ङ) अधिकरण, करण कारक।

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें। **12.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें। **14.** विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

7. स्कूल मुझे अच्छा लगा!

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (i)

2. (क) नए स्कूल के गेट के दो खम्भे असल में **पेड़** थे।

(ख) स्कूल के कमरों की जगह **रेलगाड़ी** के बेकार डिब्बे काम में लाए जाते थे।

(ग) तोत्तो-चान के डैडी के पास ढेरों **वायलिन** थे।

(घ) तोत्तो-चान के कपड़े इसलिए फटते थे, क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में **झाड़ियों** के बीच में से घुसती थी।

(ङ) नए स्कूल के हेडमास्टर मि० **सोसाकु कोबायाशी** थे।

3. (क) तोत्तो-चान ने हेडमास्टर को स्टेशन मास्टर इसलिए कहा, क्योंकि अगर वे सारे रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक हैं तो वे स्टेशन मास्टर हुए।

(ख) तोत्तो-चान को नया स्कूल इसलिए अच्छा लगा, क्योंकि वह रेल के डिब्बों में चलाया जा रहा था।

(ग) रेलगाड़ी के डिब्बों में स्कूल चलाना एक अनूठी बात थी, क्योंकि ऐसा स्कूल पहली बार देखा जा रहा था।

(घ) तोत्तो-चान ने अपनी फ्रॉक के विषय में हेडमास्टर से बताया कि माँ नहीं जानती कि उसकी फ्रॉकें झाड़ियों और कँटीले तारों के नीचे से निकलने में फट जाती हैं। इसलिए उसे यह नई खरीदी हुई फ्रॉक पहननी पड़ी।

(ङ) तोत्तो-चान को हेडमास्टर जी से बात करना इसलिए अच्छा लगा, क्योंकि उन्होंने उसकी बातें बड़ी रुचि से सुनी थीं।

(च) 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' का अभिप्राय है—अलग-अलग स्थानों का अलग-अलग खानपान।

(छ) माँ ने तोत्तो-चान के लिए यह प्रार्थना की कि इस बार सब शुभ हो।

(ज) तोत्तो-चान को स्कूल जाते देख माँ की आँखें इसलिए भर आईं, क्योंकि उनकी चुलबुली बिटिया जो हाल ही में एक स्कूल से निकाली जा चुकी थी, आज इतनी खुशी से स्कूल जा रही थी।

(झ) तोत्तो-चान स्कूल जाने के लिए इसलिए उत्सुक थी क्योंकि उसे यह स्कूल अच्छा लगा था।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) विश्वसनीय (ख) स्थावर (ग) तैराक

(घ) छात्रा (ङ) अध्यापक।

5. (क) ने, का (ख) के, में (ग) पर

(घ) की (ङ) में, से

6. **(क) अर्थ** — संरक्षण देना।

वाक्य-प्रयोग — जिसके सिर पर गुरुजी ने हाथ रख दिया समझो उसका उद्धार हो गया।

(ख) अर्थ — प्रसन्न होना।

वाक्य-प्रयोग — माँ का प्यार पाकर बच्चा किलकारियाँ मारने लगा।

(ग) अर्थ — स्वीकृति, अस्वीकृति के लिए संकेत करना।

वाक्य-प्रयोग — अध्यापक ने कहा, "बच्चों, सिर हिलाते रहोगे या समझ में भी आ रहा है।"

(घ) अर्थ — धैर्य धारण करना।

वाक्य-प्रयोग — साहूकार के रोज-रोज के तकादे को देखकर रामू ने कहा, धीरज धरो मैं फसल बेचकर पैसा दे दूँगा।

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें। **8.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें। **12.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

8. एक सिंड्रेला ऐसी भी

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (i)

2. **(क) भावार्थ**—बेबी हाल्दार को अपनी रचना लिखते समय यह नहीं मालूम था कि लेखन में कैसे और किन शब्दों का चयन किया जाता है।

(ख) भावार्थ—अब बेबी हाल्दार को अपने बच्चे कामयाब करने हैं और उनके साथ-साथ अपनी भी एक पहचान बनानी है, जिसे लोग सदैव याद रखें।

3. (क) बेबी हाल्दार का बचपन बड़े ही अभाव और प्रताड़नाओं में बीता। बचपन में ही उनकी माँ मर गईं और तब से उन्होंने स्वयं को अपने पिता से पिटते ही देखा।

(ख) बेबी अपनी बदकिस्मती का जिम्मेदार अपनी अशिक्षा को मानती थी।

(ग) लेखिका ने बेबी हाल्दर को 'सिंड्रेला' इसलिए कहा, क्योंकि जिस तरह सिंड्रेला की जिंदगी एक परी ने बदल दी थी उसी तरह बेबी की जिंदगी को प्रो० प्रबोध कुमार ने नई दिशा दी।

(घ) किताब का नाम 'आलो-अंधारी' इसलिए रखा गया, क्योंकि बेबी की यादों में अभाव और प्रताड़ना भरी अनेक रातें ही जमा थीं।

(ङ) बेबी द्वारा लिखी गई कहानी को पढ़कर प्रो प्रबोध कुमार के आश्चर्य के ठिकाना न रहा।

(च) न्यूयॉर्क टाइम्स, इण्टरनेशनल हेराल्ड, ट्रिब्यून और क्रिश्चन मॉनिटर ने उनकी कहानी छापी।

(छ) प्रो० प्रबोध कुमार ने हाल्दार की पुस्तकों में रुचि देखकर उन्हें अपनी पिछली जिंदगी के बारे में आपबीती लिखने को कहा। हाल्दार ने अपने शब्दों में वह सब लिख डाला जो अब तक उनके साथ हुआ था। उनकी लिखी रचना 'आलो अंधारी' का कई भाषाओं में प्रकाशन हुआ। आज उनके पास सब कुछ है। इस तरह प्रो० प्रबोध कुमार के सहयोग से लिखी इस रचना ने उनका जीवन बदल दिया।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) **दूसरों** को देखकर काम मत करो। तुम **दूसरा** मार्ग चुन लो!
   (i) सर्वनाम (✓)   (ii) विशेषण (✓)

   (ख) **अच्छे** लोग तो कम ही मिलते हैं। गेट्स **अच्छा** बोलते हैं।
   (iii) विशेषण (✓)   (iv) क्रियाविशेषण (✓)

5. (क) (iii)   (ख) (iii)   (ग) (iii)   (घ) (ii)   (ङ) (iii)

6. (क) तय— निश्चित— अपने अंदर यह तय कर लो कि परीक्षा में अच्छे अंक लाने हैं।
   तह — परत — कपड़ों को तह लगाकर रखिए।

   (ख) सजा — सजावट — माली ने बगिया फूलों से सजा रखी है।
   सज़ा — दंड — गलती करने पर सज़ा मिलनी चाहिए।

7. (क) प्रश्नवाचक   (ख) निषेधवाचक   (ग) विधानवाचक
   (घ) प्रश्नवाचक   (ङ) विधानवाचक   (च) निषेधवाचक

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।   9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।   11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

9. जीवन नहीं मरा करता है

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. (क) **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि बहुरूपिया जीवन जीने वालों तथा ढोंगी व्यक्तियों को भी संबोधित करते हुए कहता है कि दुख या हताशा किसी भी समस्या का निदान नहीं है इसलिए दुख करना व्यर्थ है, क्योंकि कुछ खिलौनों के खो जाने से बचपन का अंत नहीं होता।

(ख) **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि उन लोगों को संबोधित करता है जो निराशारूपी अंधकार की अवधि को और बढ़ाते जा रहे हैं और जीवन की आयु घटा रहे हैं। कवि ऐसे लोगों को आशावान बनने का संदेश देता है और कहता है कि इस प्रकार आशारहित होना व्यर्थ है। वह उपवन का उदाहरण देते हुए कहता है कि उपवन के जीवन में न जाने कितनी बार पतझड़ आता है किंतु उसका अंत नहीं होता। वह पुन: हरा-भरा हो जाता है।

3. (क) कवि ने 'मोती व्यर्थ लुटाने वालो' शब्द का प्रयोग दुखी और निराश लोगों के लिए किया है।

(ख) माली के उपवन लूटने पर भी फूल की सुगंध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(ग) यदि कुछ लोग नाराज हो जाएँ, तो भी दर्पण का अस्तित्व नहीं समाप्त होगा।

(घ) थोड़े-बहुत पानी के बह जाने से सावन पर कोई असर नहीं पड़ता।

(ङ) माला के बिखर जाने से कवि का तात्पर्य है, संयुक्त लोगों या परिवारों का एकाकी रूप में परिवर्तित हो जाना। सभी को एक-न-एक दिन एक-दूसरे से अलग होना ही पड़ता है। जो कल होना था वह आज हो गया। अत: इस तरह समस्या स्वयं ही हल हो गई।

(च) पतझड़ के कोशिश करने पर भी उपवन नहीं मरता है। ऐसा इस प्रकार संभव होता है कि जब-जब पतझड़ आते हैं तब-तब पेड़ों के सारे पत्ते झड़ जाते हैं किंतु पुन: उनमें नए पत्ते आ जाते हैं और उपवन फिर से हरा-भरा हो जाता है। इस प्रकार उसका अंत नहीं होता।

(छ) 'दर्पण नहीं मरा करता है' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि व्यक्ति को सदैव आशावान रहना चाहिए। इसके लिए वह दर्पण का उदाहरण पेश करता है।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) उपमा अलंकार (ख) रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार

5. विशेषण **विशेष्य**

कच्ची	नींद
फटी	कमीज
फीकी	चाँदनी
टूटा	दर्पण

6. (क) आँख (ख) आँगन (ग) आँसू (घ) चाँदनी

7. धूप — बादलों की वजह से धूप अधिक नहीं लग रही है।
वस्त्र — आत्मा जीर्ण कायारूपी वस्त्र बदलकर पुन: नया धारण करती है।
पतझड़ — बरसात के बाद पतझड़ आता है।
आँसू — बेटी को विदा करते समय माँ के आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे।
मोती — सागर से गोताखोरों के द्वारा बड़ी मेहनत से मोती निकाला जाता है।

8.

नयन	**तत्सम**	आशा	**तद्भव**	आँख	**तद्भव**	अश्रु	**तत्सम**
व्यर्थ	**तत्सम**	आँगन	**तद्भव**	कमीज	**विदेशी**	पोथी	**देशज**
जिल्द	**विदेशी**	वस्त्र	**देशज**	खिलौना	**देशज**	बचपन	**देशज**
गगरी	**देशज**	पनघट	**देशज**	तट	**तत्सम**	तम	**तत्सम**

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें। **12.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें। **14.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

10. मेरा सबसे प्यारा ओलंपिक पदक

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iv)

2. (क) क्रोध से बुद्धि का क्षय होता है जिससे खिलाड़ी बार-बार गलतियाँ करना शुरू कर देता है।
(ख) 'कोई चीज तुमको खाए जा रही है।' इस बात से अभिप्राय है कि तुम अपने मन में किसी बात को लेकर घबराए हुए हो।

3. (क) जेसी ओवेंस अमेरिकन (नीग्रो) खिलाड़ी था।
(ख) जेसी 1936 बर्लिन ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने आया था।
(ग) 'टेक ऑफ बोर्ड' किसी चीज के लिए एक निर्धारित रेखा है।

(घ) जब असली परीक्षा की घड़ी आई और लुज ने स्वयं अपना ही कीर्तिमान तोड़ डाला तब उसने जेस्सी को चोटी का प्रदर्शन करने के लिए बाध्य किया और जेसी ने 26 फुट $5\frac{5}{16}$ इंच का ओलंपिक कीर्तिमान बनाने वाली अंतिम छलाँग लगाई।

(ङ) जेसी ओवेंस ने जर्मन खिलाड़ी लुज लौंग तथा उसकी शासक प्रजाति को यह दिखाने का निश्चय किया कि कौन कितना श्रेष्ठ है।

(च) जेसी ने लुज लौंग का वर्णन अपने शब्दों में करते हुए बताया है कि उसकी मित्रता सोने जैसी खरी थी जिसके सामने मेरे सारे स्वर्ण पदक महत्त्वहीन थे।

(छ) बर्लिन पहुँचकर जर्मन खिलाड़ी लुज लौंग के 26 फुट कूद के अभ्यास को देखकर जेसी चकित रह गया।

(ज) जेसी ओलंपिक गाँव में लुज लौंग को धन्यवाद देने के लिए उससे मिलने गया।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) हमारे बीच सच्ची **मित्रता** कायम हो चुकी थी।

(ख) मैं इस ओलंपिक प्रतिस्पर्द्धा में **विजयी** होऊँगा।

(ग) मैं इन बातों को लेकर बहुत **चिंतित** नहीं था।

(घ) उसकी बातों की **सच्चाई** ने मुझको झकझोरा।

(ङ) मैंने ओलंपिक कीर्तिमान बनाने वाली **अन्तिम** कूद लगाई।

5. (क) प्रदर्शन (पुल्लिग), जीत (स्त्रीलिंग)
पहचान—क्रियाविशेषणों को देखकर।

(ख) आँखें (स्त्रीलिंग), चेहरा (पुल्लिग)
पहचान—क्रियाविशेषणों को देखकर।

(ग) नतीजा (पुल्लिग), कूद (स्त्रीलिंग)
पहचान—क्रिया को देखकर।

(घ) सच्चाई (स्त्रीलिंग), तनाव (पुल्लिग)
पहचान—कारक चिह्नों को देखकर।

6. कीर्तिमान, प्रतिस्पर्द्धा, अनुत्तीर्ण, महत्त्वपूर्ण, सर्वोत्तम।

7. भावना, नजर, तौर-तरीका, आँख, मिनट, घंटा, बात, चीज।

8. उपसर्ग—प्र, प्र, अनु, अप, अति, अ, अन्, परि, प्र, प्र
मूलशब्द—जाति, शिक्षण, शासन, वाद, क्रमण, मान्य, उत्तीर्ण, स्थिति, दर्शन, गाढ़

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें। **11.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें। **13.** विद्यार्थी स्वयं करें। **14.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

11. विधाता की अनुपम रचना

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (i)

2. **भाव**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि देश के कर्णधारों का आह्वान करते हुए प्रकृति को नष्ट होने से बचाने के लिए उन्हें पुकार रहा है। वे कहते हैं कि आओ हम सब मिलकर प्रकृति को नष्ट होने से बचाएँ। यह विधाता का अनुपम उपवन कहीं हमारी भूल से उजड़ न जाए, क्योंकि यह अमूल्य धन है। यह हमारा जीवन प्रकृति प्रदत्त जिन सुविधाओं का उपभोग करके संपूर्ण सुख का अनुभव करता है आज धीरे-धीरे वे सारी चीजें हमसे दूर होती जा रही हैं। इसके पीछे वह कौन-सी भूल है जो हम करते जा रहे हैं। इसलिए आओ हम सब मिलकर इस प्रकृतिरूपी अमूल्य गोद का संरक्षण करें और अपने जीवन की रक्षा करें।

3. (क) प्राणी और पौधों का प्राकृतिक चक्र हमें हमेशा मंत्रमुग्ध करता है।

(ख) पशु-पक्षी अपनी विशेषताओं के कारण आने वाली अशुभ घटनाओं का आभास पा लेते हैं।

(ग) भूकंप की भविष्यवाणी के लिए मनुष्य अपने द्वारा बनाए गए यंत्रों के अलावा पशु-पक्षियों के असाधारण व्यवहार पर भी निर्भर है।

(घ) सूर्य और चंद्र ग्रहण शुरू होने से पहले बंदर भोजन त्याग देते हैं।

(ङ) तोतों की अशुभ घटनाओं की पूर्व जानकारी की विशेषता के कारण प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान पेरिस के 'एफिल टॉवर' में तोतों को रखा गया था, ताकि ये हवाई हमले की पूर्व सूचना दे सकें।

(च) मनुष्य का प्रकृति के प्रति यह कर्त्तव्य है कि वह उसका संरक्षण करे।

(छ) यदि गाँवों से शहरों की ओर पलायन न होता तो गाँवों का रूप और भी मंत्रमुग्ध करने वाला होता। सारी व्यवस्थाएँ वहीं पहुँच जातीं और कोई अपनों से दूर ना जाता। गाँवों का विकास हो जाता।

(ज) यदि प्रदूषण को दूर करने की जिम्मेदारी हमें दे दी जाए तो हम सबसे पहले इसकी शुरुआत वृक्षारोपण से करेंगे।

❒ व्याकरण-बोध

4.

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
मधुर	मधुतर	मधुरम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
सुंदर	से सुन्दर	सबसे सुन्दर

5. अग्नि आग, प्रकाश।
आग वह होती है जो ईंधन द्वारा प्रज्वलित की जाती है।
प्रकाश वह होता है जिसके माध्यम से अँधेरा दूर भगाया जाता है।

6. परिपूर्ण — प् अ र् इ प् ऊ र् ण् अ
सूर्यास्त — स् ऊ र् य् आ स् त् अ
आश्चर्य — आ श् च् अ र् य् अ
वर्षा — व् अ र् ष् आ
सौहार्द — स् औ ह् आ र् द् अ

7.

विशाल—तुच्छ	सूर्यास्त—सूर्योदय	प्रथम—अंतिम
प्राकृतिक—अप्राकृतिक	त्यागना—संग्रहण करना	मानव—दानव
सुरक्षित—असुरक्षित	कर्तव्य—अकर्तव्य	सामान्य—असामान्य
लुप्त—प्रकट	पूर्व—उत्तर	व्यक्तिगत—सार्वजनिक

8.

मन — चित्त, एक तौल।	कर — हाथ, किरण।
पर — पंख, दूसरा।	पूर्व — पहला, एक दिशा।
ग्रहण — लेना, कैद करना।	

9.

छटा — छवि,	ओर — तरफ।
छठा — पाँच के बाद का अंक	और — दूसरा।

10. हरे-हरे, धीरे-धीरे, छोटे-छोटे। (पूर्ण दुरुक्त)
पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, उछल-कूद, क्रिया-कलाप, फलते-फूलते। (अपूर्ण दुरुक्त)

11. (ख) सरकारी संस्थाओं के द्वारा पशु-पक्षियों के संरक्षण में काम किया जाता है। (कर्मवाच्य)
(ग) इन अबोध जीव-जन्तुओं से मनुष्य को सावधान किया जाता है। (कर्मवाच्य)

❒ योग्यता-विस्तार

12. विद्यार्थी स्वयं करें। 13. विद्यार्थी स्वयं करें। 14. विद्यार्थी स्वयं करें।
15. विद्यार्थी स्वयं करें। 16. विद्यार्थी स्वयं करें। 17. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन मूल्य

18. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

12. मशीनी मानव

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii)

2. (क) माहीगीर को विचारक द्वारा पीछा करने का डर था।

(ख) किनारे पर आकर माहीगीर ने जल्दी से अपनी नाव खोली और उसे तूफ़ानी पानी में खेना शुरू कर दिया।

(ग) पलटकर देखने पर तेज आग की लपटों ने उसे चौंका दिया। उसने देखा कि विचारक द्वारा बनाई गई दुनिया को विचारक स्वयं ही अपने हाथों से जला रहा है।

3. (क) मशीनी मानव के गुम हो जाने पर कई अनुमान लगाए जा रहे थे। किसी का ख्याल था कि आदमी से ज्यादा दिमाग रखने के कारण उसका दिमाग फट गया होगा। किसी का ख्याल था कि वह किसी अन्य नक्षत्र में चला गया होगा।

(ख) विचारक द्वारा बसाई जाने वाली दुनिया प्रेम-स्नेह तथा बच्चों से रहित होती।

(ग) वैज्ञानिकों ने यह सोचकर दूसरा मशीनी मानव नहीं बनाया कि जब पहले वाले ने ऐसा करतब दिखाया है, तो दूसरा न जाने क्या-क्या जुल्म ढाएगा।

(घ) टापू के किनारे पहुँचकर माहीगीर अलग तरह के लोगों द्वारा बसी दुनिया को देखकर हैरान रह गया।

(ङ) मशीनी मानव के गिरोह के लोग लकड़ी काटने वाले लड़की के, लोहा खोदने वाले लोहे के, रूई धुनने वाले रूई के तथा कोयला बनाने वाले कोयले के बने हुए थे। ये लोग एक-दूसरे से अलग थे।

(च) मशीनी मानवों की दुनिया वास्तविक दुनिया के लोगों से इस तरह भिन्न थी कि वहाँ के लोगों को खाना, पीना, ठिठुरना, साँस लेना आदि की कोई आवश्यकता नहीं थी।

(छ) तथा (ज) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

4. नाक-कान — नाक और कान
ग्रह-नक्षत्र — ग्रह एवं नक्षत्र
रुई-कोयला — रुई और कोयला
नदी-नाले — नदी और नाले
लोहा-लक्कड़ — लोहा तथा लक्कड़
घर-द्वार — घर और द्वार

5. सिर धुनना — जब लालची व्यापारी के हाथ से सोने का कटोरा निकल गया तो वह सिर धुनकर रह गया।

चेहरा खिलना — परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होने का समाचार सुनकर मोनी का चेहरा खिल गया।

आँखें जलना — पड़ोसी की प्रगति देखकर ईर्ष्यालु अनिल की आँखें जल उठीं।

6. क्ष — क् ष् अ कक्षा
ज्ञ — ज् ञ् अ ज्ञान
श्रृ — श् ऋ श्रृंगार
त्र — त् र् अ त्रिशूल
श्र — श् र् अ श्रम

7. टहनी — टहनियाँ | चेहरा — चेहरे | घोषणा — घोषणाएँ
गाड़ी — गाड़ियाँ | कपड़ा — कपडे | जरूरत — जरूरतें
मछली — मछलियाँ | बच्चा — बच्चे | तस्वीर — तस्वीरें

8. पेड़ — वृक्ष, विटप | आजादी — स्वतंत्रता, मुक्ति
नाव — नौका, बेड़ा | मछली — मीन, मत्स्य
समुद्र — सागर, सिंधु | हाथ — कर, हस्त
शरीर — तन, गात | जमीन — धरती, भूमि

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें। 10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें। 12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

13. हिंदी जन की बोली है

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iii)
2. (क) उच्च वर्ग की प्रिय अंग्रेजी।
(ख) नए अर्थ के रूप धारती।
(ग) भरी-पूरी हों सभी बोलियाँ।
(घ) वर्ग-भेद को खत्म करेगी।
हिंदी वह हमजोली है।
3. **(क) भाव**—हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा है। हम अपने देश में विदेशी सौत अर्थात् अंग्रेजी भाषा को रानी का दर्जा नहीं देना चाहते।
(ख) भाव—आज अंग्रेजी बड़े लोगों की प्रिय भाषा जरूर बन गई है, किंतु फिर भी हिंदी सम्पूर्ण जनों की बोली है। हिंदी ही मात्र ऐसी भाषा है जो सबको अपनाकर इस ऊँच-नीच के भेद-भाव को समाप्त करेगी।
4. (क) हिंदी सबको एक डोर में बाँधती है।
(ख) 'सौत विदेशी' कवि ने अंग्रेजी भाषा को कहा है।
(ग) हिंदी हमारी मातृभाषा है। इसे हम कैसे भी तोड़-मोड़कर बोल सकते हैं। हम अपने मन के भावों को अपनी निज भाषा में भी व्यक्त कर सकते हैं, इसलिए हिंदी मधुर व मनभावन है।

(घ) भेद-भाव को समाप्त करने में हिंदी इसलिए सहायक है, क्योंकि हिंदी हमारी संस्कृति है जो सभी भाषाओं तथा सभी संस्कृतियों को शरण देती है। यह सभी भाषाओं का संगम है।

(ङ) विद्यार्थी स्वयं करें।

(च) विश्व को एक सूत्र में पिरोए रखने में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी भाषा अन्य सभी भाषाओं को बहन मानती है। यह भेद-भावों को खत्म करती है।

(छ) कविता में आए बंगाली और मराठी भाषा के क्रमश: शब्द हैं—भालो-बाशी तथा खाली-पीली बोम मारती है।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) समदर्शी (ख) संगम (ग) अनुपम (घ) चौरंगी
(ङ) चौपाटी (च) कृतज्ञ

6.

(क) वर्ग-भेद	— वर्ग का भेद	तत्पुरुष समास
(ख) प्रीति-पियासी	— प्रीति की प्यासी	तत्पुरुष समास
(ग) पूरब-पश्चिम	— पूरब और पश्चिम	द्वन्द्व समाज
(घ) कमल-पंखुरी	— कमल की पंखुड़ी	तत्पुरुष समास

7.

देशज — माटी	प्रीति-पियासी	हमजोली	भालो-बाशी
तत्सम — जन	मधुर	उच्च	नाद
तद्भव — रानी	सौत	धाती	कमल-पंखुरी

8.

सागर — सिंधु	समुद्र
नदी — सरिता	तटिनी
अनुपम — अद्भुत	अनोखा
कामना — लालसा	इच्छा

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें। **10.** विद्यार्थी स्वयं करें। **11.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें। **13.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

14. यह मेरा, यह मीत का

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

2. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य (घ) असत्य

3. (क) कथन का भाव यह है कि हमारे अध्यापक उन अध्यापकों में से एक थे जो कठिन-से-कठिन कार्य को भी आसानी से करवा लेते थे।

(ख) कथन का भाव यह है कि जिस प्रकार सुदामा को द्वारिका से लौटने पर रंक से राजा बन जाने का आश्चर्य हुआ था उसी प्रकार मंत्री को भी अपने पुत्र को समझ आने पर आश्चर्य हुआ।

(ग) कथन का भाव यह है कि व्यापारी के भाग्य पर पत्थर पड़ गए अर्थात् भाग्य दुर्भाग्य में बदल गया।

(घ) कथन का भाव यह है कि व्यापारी की दशा फिर से सुधर गई।

4. (क) धनी बालक में यह विशेष गुण था कि उसके अपने गरीब मित्र के लिए दिल था।

(ख) धनी बालक ने अपने मित्र के लिए खाने-पहनने और पढ़ाई-लिखाईं के सारे खर्चे की व्यवस्था करवाई।

(ग) निर्धन मित्र की शिक्षा का यह परिणाम निकला कि वह पढ़-लिखकर एक प्रकांड विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

(घ) निर्धन मित्र की विद्वता की ख्याति सुनकर उस राज्य के राजा ने अपने दरबार में उसका स्वागत किया और उसकी विद्वता पर मुग्ध होकर उसे अपना राजमंत्री बना लिया।

(ङ) मंत्री ने राजा से सौ मुद्राएँ दान में दिलाकर अपने मित्र की सहायता की।

(च) व्यापारी मित्र ने मंत्री के पुत्र को यह शिक्षा दी कि अगर तुम एक-एक ज्ञान को, एक-एक विद्या और गुण को अपना समझ लो तथा अपने लिए व अपने मित्रों के लिए दिल और दिमाग में रखते जाओ, तो तुम भी मेरी तरह ज्ञान और गुण के लखपति बन जाओगे।

(छ) इस कहानी का मुख्य संदेश यह है कि हमें एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। सहयोग से आपस में प्रेम और आत्मविश्वास बढ़ता है।

❒ व्याकरण-बोध

5. पूर्णिमा — प् ऊ र् ण् इ म् आ

व्यापारी — व् य् आ प आ र् ई

मुद्राएँ — म् उ द् र् आ ए अँ

6. व् य व्य — व्यवस्था व्यवहार व्यस्त

द् र द्र — भद्र दरिद्र शूद्र

त् य त्य — त्याग त्योहार सत्य

क् त क्त — सूक्ति उक्ति भक्त

7. (क) जातिवचाक (ख) जातिवाचक (ग) व्यक्तिवाचक

(घ) जातिवाचक (ङ) व्यक्तिवाचक (च) भाववाचक

(छ) भाववाचक

8. योजना — योजनाएँ | कला — कलाएँ
मुद्रा — मुद्राएँ | सुविधा — सुविधाएँ
लता — लताएँ | कथा — कथाएँ
महिला — महिलाएँ | व्यवस्था — व्यवस्थाएँ

9. उन्नति — प्रगति | मदद — सहायता
अतिथि — मेहमान | शिक्षक — अध्यापक

10. मत
- नहीं — बेटा शहर मत जाओ।
- राय (विचार) — कृपया, उचित मत देकर मेरा मार्गदर्शन करें।

नाना
- माँ के पिता — छुट्टियों में मैं नाना के घर जाऊँगी।
- अनेक — योगासन नाना प्रकार की बीमारियों का निदान है।

लाख
- गणना की संख्या — राज्य सरकार ने सड़क-निर्माण के लिए दस लाख रुपये दिए।
- एक पदार्थ जिससे चूड़ियाँ और खिलौने बनते हैं। — दुर्योधन ने लाख के घर में पांडवों को जलाने की योजना बनाई।

11. (क) दाने-दाने को मुहताज (ख) मुँह लटकाकर
(ग) हाथ बँटाने

12. (क) वह (ख) मैं (ग) उसने (घ) मैं
(ङ) मुझे (च) वह

❒ योग्यता-विस्तार

13. विद्यार्थी स्वयं करें। 14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

15. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

15. निष्ठुर अनुकंपा

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii)

2. (क) (3) (ख) (2) (ग) (4) (घ) (1) (ङ) (5)

3. (क) कुलीन परिवार के निर्वाह का साधन सहिजन का पेड़ था।
(ख) कुलीन परिवार के सदस्यों द्वारा नौकरी न करने का परिणाम यह हो रहा था कि घर की गरीबी दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। घर में कुछ भी नहीं बचा था और खाने के लाले पड़ गए थे।
(ग) रिश्तेदार के सामने भोजन के समय भाइयों ने परिवार की बुरी दशा को छिपाने के लिए अपने-अपने ढंग से बहाना बना दिया।
(घ) मेहमान ने सहिजन के पेड़ को यह सोचकर काटा कि यह पेड़ ही है जो इनकी काहिली और बुजदिली का कारण बना हुआ है। इसके कट जाने पर ये मजबूर होकर कोई-न-कोई कार्य करेंगे और इनके अच्छे दिन आ जाएँगे।
(ङ) जीवन-निर्वाह का आधार सहिजन के पेड़ के कट जाने क कारण भाइयों के लिए नौकरी करना आवश्यक हो गया था।

❐ व्याकरण-बोध

4. कर्त्ता कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक, सम्बन्ध कारक, कर्म कारक, कर्त्ता कारक।

5.
देहाती	— देहातिन	ग्वाला	— ग्वालिन
पुजारी	— पुजारिन	मालिक	— मालकिन
दूल्हा	— दुलहिन	सुनार	— सुनारिन

6. विद्यार्थी स्वयं करें।
7. कीमती, प्रतिष्ठित, बनावटी, खानदानी, पारिवारिक, जानकार।
8. (i) अपने विषय को **ध्यानपूर्वक** पढ़िए।
(ii) फिसलन भरे रास्ते में **धीरे-धीरे** चलिए।
(iii) पहाड़ों के बीच झरना **तेजी से** गिरता है।
(iv) ऊँचाई वाले खेतों पर पानी **रुक-रुककर** बहता है।
(v) मुकुल की तबीयत **अचानक** खराब हो गई।
9. दूरदर्शिता, बदकिस्मती, गरीबी, दुश्मनी, दुष्टता, रिश्तेदारी।
10.
शरीक	— शामिल, मिला हुआ, साझी।
तकलीफ	— कष्ट, परेशानी, दिक्कत।
मेहमान	— पाहुन, अतिथि, आगन्तुक।
दोस्त	— मित्र, सखा, मीत।
फिक्र	— चिंता, परवाह, ध्यान।
कीमत	— लागत, मूल्य, दाम।

❐ योग्यता-विस्तार

11. विद्यार्थी स्वयं करें। 12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें। 14. विद्यार्थी स्वयं करें।

❏

16. कुंडलियाँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (iii)

2. (क) बिना विचारे (ख) घमंड (ग) वाणी (घ) विनम्र
(ङ) गुणों

3. (क) दौलत सबकी परीक्षा अतिथि की भाँति लेती है।
(ख) हमें अपने अंदर ऐसे गुणों का विकास करना चाहिए जो सभी को अच्छे लगें।
(ग) गुणग्राही लोगों की यह विशेषता है कि वे गुणी लोगों का ही चुनाव करते हैं।
(घ) बिना विचारे कार्य करने से निम्नलिखित हानियाँ हो सकती हैं—
(i) बाद में पछताना पड़ता है।
(ii) जग हँसाई होती है।
(iii) मन में चिंता बढ़ जाती है।
(iv) खान-पान, सम्मान तथा वातावरण कुछ भी अच्छा नहीं लगता।
(ङ) दौलत पाकर अभिमान करना उचित इसलिए नहीं है, क्योंकि यह एक जगह स्थिर नहीं रहती। आज आपके पास है तो कल किसी और के पास होगी।
(च) धन-दौल को मेहमान की संज्ञा इसलिए दी गई है, क्योंकि जिस तरह मेहमान किसी के यहाँ सदैव ही नहीं बने रहते उसी प्रकार धन-दौलत भी किसी के पास सदैव नहीं बनी रहती।
(छ) काग और कोकिला में यह अंतर होता है कि काग की आवाज़ कर्कस होती है तथा कोयल की आवाज़ मधुर होती है।

❐ व्याकरण-बोध

4.

गिरिधर	— व्यक्तिवाचक	कवि	— जातिवाचक
जग	— व्यक्तिवाचक	दौलत	— जातिवचाक
अभिमान	— भाववाचक	पाहुन	— जातिवाचक

5. अभिमान — दुर्योधन को सौ भाइयों का अभिमान था।
दौलत — संतोष सबसे बड़ी दौलत है।
ग्राहक — सच्चा व्यापारी ग्राहक को देवता मानता है।
चंचल — मन बड़ा चंचल है।

❐ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें। **7.** विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन मूल्य

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

हिंदी व्याकरण-7

1. भाषा, व्याकरण और लिपि

(क) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मन के भावों और विचारों को प्रकट किया जाता है तथा दूसरों के भावों तथा विचारों को जाना जाता है।

2. भाषा के निम्नलिखित दो रूप हैं—

◆ **मौखिक भाषा**—जो भाषा बोलकर अथवा सुनकर समझी अथवा प्रयोग की जाती है, वह मौखिक भाषा कहलाती है। इसमें ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है। यह परिवर्तनशील है।

उदाहरण—गाना, भाषण देना, समाचार वाचन आदि।

◆ **लिखित भाषा**—जो भाषा लिखकर अथवा पढ़कर समझी अथवा प्रयोग की जाती है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। यह अपरिवर्तनशील भाषा है।

उदाहरण—लेख, कहानी, समाचार पत्र, उपन्यास आदि।

3. जिस शास्त्र द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोलने, लिखने तथा, पढ़ने का ज्ञान होता है, वह व्याकरण कहलाता है।

(ख) 1. रोमन 2. देवनागरी 3. गुरुमुखी

(ग) 1. ध्वनियों 2. वर्णों 3. 22

(घ) 1. अ 2. स

❑

2. वर्ण-विचार

(क) 1. भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते, वर्ण कहलाती है।

2. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वरों के निम्नलिखित तीन भेद हैं—

(i) **ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं;
जैसे—अ इ उ ऋ

(ii) **दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं; जैसे—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ

(iii) **प्लुत स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा तीन गुना अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर का प्रयोग प्राय: दूर से बुलाने के लिए किया जाता है;
जैसे—ओ३म; श्यामा३ इधर आ।

3. **व्यंजन**—जिन वर्णों का उच्चारण करने में वायु फेफड़ों से निकलती हुई सीधे कंठ से बाहर नहीं जाती तथा जिनके उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। हिंदी में 33 व्यंजन हैं।

व्यंजन के भेद—व्यंजन के निम्नलिखित तीन भेद हैं—

(i) स्पर्श व्यंजन

(ii) अंत:स्थ व्यंजन

(iii) ऊष्म व्यंजन

(ख) 1. 7 2. 25 वर्ण 3. आधे ह्

(ग) कान, खीर, कौआ

(घ) हंस, बंदर, रंग

(ङ) चाँद, साँप, आँख

(च) कविता—क् अ व् इ त् आ

भवन—भ् अ व् अ न् अ

❑

3. वर्ण-संयोग

स् र — स्रोत, स्राव

श् र — श्रमिक, श्रोता

द् ध — उद्धार, युद्ध

द् व — द्वार, हरिद्वार

ह् ल — आह्लाद, प्रह्लाद

र् श — दर्शन, फर्श

ज् ञ — ज्ञान, विज्ञान

ज् र — वज्र, वज्रासन

❑

4. संधि

(क) 1. वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार अथवा परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे—शिव आलय शिवालय

रमा ईश रमेश

2. संधि के तीन भेद हैं—

- स्वर संधि—धर्म अर्थ धमार्थ
  रवि ईश रवीश
- व्यंजन संधि—जगत् ईश जगदीश
  सत् मार्ग सन्मार्ग
- विसर्ग संधि—मन: अनुकूल मनोनुकूल
  सर: ज सरोज

3. 'संधि' का अर्थ है मेल एवं 'विच्छेद' का अर्थ है—अलग-अलग होना। दो वर्णों के मेल से जो शब्द बनता है, उसे पुन: पहले वाली स्थिति में ले आना, संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे—पवन पो अन; निर्धन नि: धन

(ख) धर्मात्मा — महाशय
हरीच्छा — लघूत्तर
वधूर्जा — देवर्षि
मतैक्य — महौध
अन्विति — भवन
तपोभूमि — नीरोग

(ग) गुरु उपदेश — नदी ईश
रेखा अंश — कवि इंद्र
वधू उत्सव — महा उष्ण
परम औदार्य — सु आगत
शे अन — पौ अक
नि: अर्थक — नि: रस

(घ) हिम आलय हिमालय
महा उत्सव महोत्सव
रमा इंद्र रमेंद्र
अधि एता अध्येता
सु आगत स्वागत
लघु ऊर्मि लघूर्मि
पितृ आलय पित्रालय

❑

5. शब्द-निर्माण: समास

(क) 1. जब दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नए स्वतंत्र शब्द की रचना की जाती है, तो उस शब्द की रचना विधि, समास कहलाती है।
दीवार के लिए घड़ी दीवारघड़ी
घोड़े पर सवार घुड़सवार

2. समास के निम्नलिखित चार भेद होते हैं—
- अव्ययीभाव समास—यथासंभव—जैसे संभव हो
  आजन्म—जन्म से लेकर
- तत्पुरुष समास—नगरगत—नगर को गया हुआ
  जन्मरोगी—जन्म से रोगी

- द्वंद्व समास—भाई-बहन—भाई और बहन
  गुरु-शिष्य—गुरु और शिष्य
- बहुव्रीहि समास—त्रिलोचन—तीन है लोचन जिसके (शंकर)
  पंकज—पंक से जन्मा (कमल)

3. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर—

क्र.सं.	कर्मधारय समास	बहुव्रीहि समास
1.	इसमें दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है।	इसमें दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की विशेषता प्रकट करते हैं।
2.	**उदाहरण**—नीलकंठ—नीला कंठ पीतांबर—पीला अबंर (वस्त्र)	**उदाहरण**—नीलकंठ—नीला है कंठ जिसका (शिव); पीतांबर—पीले अबंर (वस्त्र) हैं जिसके (श्रीकृष्ण) या विष्णु।

4. बहुव्रीहि समास तथा द्विगु समास में अंतर

क्र.सं.	बहुव्रीहि समास	द्विगु समास
1.	यदि दोनों के मेल से कोई अन्य अर्थ निकल रहा हो, तो बहुव्रीहि समास होता है।	यदि समस्तपद में पहला पद संख्यावाची हो, तो द्विगु समास होता है।
2.	**उदाहरण**—चतुर्भुज—चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु	**उदाहरण**—चतुर्भुज—चार भुजाएँ

(ख) गज के समान है मुख जिसका — बहुव्रीहि समास
हाथ के लिए कड़ी — तत्पुरुष समास
महान है जो देव — कर्मधारय समास

(ग) रातोंरात — पंकज
नवरत्न — चराचर

(घ) 1. नमन कामचोर है। 2. जन्मरोगी व्यक्ति परलोकगमन कर गया।
3. सेनानायक को बुलाया गया। 4. भयभीत व्यक्ति तुरंत भाग निकला।

❑

6. शब्द-निर्माण: उपसर्ग और प्रत्यय

(क) 1. जो शब्दांश मूल शब्द के प्रारंभ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता अथवा परिवर्तन उत्पन्न करते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं;
जैसे—कु पुत्र कुपुत्र
उप वन उपवन

2. उपसर्ग की विशेषताएँ—
   - उपसर्ग शब्दों के प्रारंभ में जोड़े जाते हैं; जैसे—परि पूर्ण परिपूर्ण
   - उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है। ये केवल शब्दों के प्रारंभ में जोड़े जाते हैं; जैसे—यदि 'अप', 'वि' 'अनु' आदि उपसर्गों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जाए तो इनका कोई अर्थ नहीं निकलता।
3. जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं;
   जैसे—नौकर आनी नौकरानी
   दूध वाला दूधवाला
4. प्रत्यय के निम्नलिखित दो भेद होते हैं।
   - **कृत् प्रत्यय**—क्रिया (धातु) के पीछे लगकर संज्ञा और विशेषण शब्दों की रचना करने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं। इसके मेल से बनने वाले शब्द 'कृदंत' कहलाते हैं;
     जैसे—लिख आवट लिखावट (क्रिया या धातु प्रत्यय)
   - **तद्धित प्रत्यय**—जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

(ख)	अधर्म	आजन्म
	अभिनेता	अपूर्ण
	दुष्कर्म	दुर्गुण
	अवशेष	परदेश
	पराजय	निडर

(ग)	तपस्वी, तपित	पक्षीय, पाक्षिक
	कालीन, कालिक	सर्वस्व, सर्वनाश
	देशी, देशत्व	ज्ञानी, ज्ञानवान

(घ)	बेकाबू	भरपेट	उत्थान
	अवगुण	सुप्रभात	पुरातन
	निर्दोष	परिणाम	अंतरात्मा
	निडर	लाइलाज	अभिनय

(ङ)	पठन	घटिया
	फलवाला	गुरुत्व
	चालू	भवानी

(च)	**सम्मान**	**अपमान**
	उपयोग	दुरुपयोग
	सुयश	अपयश
	अवगुण	दुर्गुण
	सुपुत्र	कुपुत्र
	सज्जन	दुर्जन

(छ) **मूल शब्द** **उपसर्ग**

तीस	उन
आचार	अति
आदि	अन
जन	सद्
चरण	आ

(ज)

इत	वती
इयत	पन
अगी	आ

(झ) 1. पिताजी सब्जी में अलग से नमक मिलाते हैं।
2. दवाई का स्वाद हल्का नमकीन था।
3. उसे अब तक गाने के बोल याद थे।
4. उत्तर प्रदेश में बहुत-सी जगह हरयाणवी बोली जाती है।

❑

7. शब्द-विचार

(क) 1. वर्णों का वह समूह जिसका निश्चित अर्थ होता है, शब्द कहलाता है;
जैसे—भ व न भवन

2. अर्थ के आधार पर शब्द के छह भेद हैं—

(i) **पर्यायवाची**—जिन शब्दों के अर्थ समान होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं;
जैसे—पानी : जल, नीर, वारि।

(ii) **विलोम**—जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ प्रदान करते हैं, उन्हें **विलोम** अथवा **विपरीतार्थक शब्द** कहते हैं; जैसे—रात-दिन, अच्छा-बुरा आदि।

(iii) **अनेकार्थी**—जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें **अनेकार्थी शब्द** कहते हैं;
जैसे—काल : मृत्यु, समय; तीर : बाण, किनारा।

(iv) **वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द**—अनेक शब्दों के स्थान पर आने वाले एक शब्द को **वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द** कहते हैं;
जैसे—सप्ताह में एक बार होने वाला : साप्ताहिक; जो कभी बूढ़ा न हो - अजर

(v) **एकार्थी**—जिन शब्दों के एक-एक अर्थ होते हैं, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं;
जैसे—नृत्य-नाच, मृत्यु - मौत, वायु - हवा आदि।

(vi) **समानाभासी शब्द-युग्म**—कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनकी वर्तनी में भिन्नता होते हुए भी उच्चारण में इतना कम अंतर होता है कि वे एकसमान सुनाई देते

हैं। ऐसे शब्दों को समानाभासी शब्द-युग्म अथवा समश्रुतिभिन्नार्थक शब्द कहते हैं; जैसे—

ओर — तरफ	ज़रा — बुढ़ापा	शाम — संध्या
और — दूसरा	जरा — थोड़ा	श्याम — काला, साँवला

3. रचना अथवा बनावट के आधार पर शब्द के निम्नलिखित तीन भेद हैं—
   (i) रूढ़ शब्द : उदाहरण—चित्र, हाथी
   (ii) यौगिक शब्द : रसोईघर, देवदूत, पानवाला
   (iii) योगरूढ़ शब्द : नीलकंठ, चतुर्भुज
4. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद हैं—
   (i) तत्सम शब्द
   (ii) तद्भव शब्द
   (iii) देशज शब्द
   (iv) विदेशज शब्द

(ख) कान | कुआँ
घर | हाथ
चैत | पिता
दाँत | जाँघ

(ग) जल वायु | हिम आलय
पाठ शाला

(घ) रूढ़—दीवार, पेड़, पुस्तक, लंगूर
यौगिक—भावार्थ, सूर्योदय, नरेश, परोपकार
योगरूढ़—दशानन, चतुर्भुज, नीलकंठ, पंकज

(ङ) तीर—किनारा, एक प्रकार का अस्त्र
काल—समय, यमराज
दंड—सजा, डंडा
कनक—सोना, धतूरा, गेहूँ

(च) अरबी, अंग्रेजी, तुर्की, पुर्तगाली

❑

8. शब्द-विवेक

(क) 1. अमृत—सुधा, सोम; सिंह—शेर, वनराज।

(ख) नम्रता | विष | रात
कठोर | अरुचि | दानव

(ग) अनिल भूपति

(घ) कठोर | | कृतघ्न
(क) अग्रज | वक्ता | अजन्मा
स्थलचर | गणितज्ञ | दर्शनीय

(ख) गोद, नाटक का भाग | गुण, अंश
बादल, घना | जीवन, प्रतिष्ठा
रिक्त स्थान, आकाश | बड़ा, शिक्षक

(ग) अचार—आम, नींबू आदि का अचार | ओर—तरफ
आचार—आचरण | और—तथा
अपेक्षा—उम्मीद | आदि—शुरू
अपेक्षा—अपमान | आदी—अभ्यस्त
अलसी—एक अनाज | कुल—वंश
आलसी—सुस्त | कूल—किनारा

(घ) गुच्छा | टुकडी
गट्ठर | गड्डी
समूह | गिरोह
माला | ढेर

❑

9. संज्ञा

(क) 1. संज्ञा के निम्नलिखित तीन भेद हैं—

- **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिस संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का बोध होता है, उसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—नमन, गीता, रामायण, गंगा, रोहतक, सोनीपत, भारत, जापान आदि।

  (i) **विशेष व्यक्तियों के नाम**—अटल बिहारी वाजपेयी, अमिताभ बच्चन, जवाहर लाल नेहरू, सचिन तेंदुलकर आदि।

  (ii) **विशेष स्थानों के नाम**—विद्यालय, दिल्ली, सोनीपत, मैसूर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, कोलकाता, आदि।

  (iii) **विशेष वस्तुओं के नाम**—रामायण, कुरान, बाइबिल आदि।

  (iv) **विशेष प्राणियों के नाम**—चेतक (घोड़े का नाम), ऐरावत (हाथी का नाम)।

- **जातिवाचक संज्ञा**—जो संज्ञा शब्द किसी विशेष व्यक्ति को न बताकर उसकी संपूर्ण जाति का बोध कराएँ, उन्हें **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—पुस्तक-समस्त पुस्तकों का, नदी-सभी नदियों का, मनुष्य-पूरी मनुष्य जाति का तथा देश-सभी देशों का बोध कराता है। अत: ये जातिवाचक संज्ञाओं के उदाहरण हैं।

- **भाववाचक संज्ञा**—वे संज्ञा शब्द जो किसी गुण, दशा, भाव आदि का बोध कराते हैं, **भाववाचक संज्ञा** कहलाते हैं; जैसे—सुंदरता, भिन्नता, यौवन, भूख, लड़ाई, बुढ़ापा आदि।

  (i) **समुदायवाचक संज्ञा**—जिस संज्ञा शब्द से समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उसे **समुदायवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—कक्षा, सभा, भीड़, सेना, परिवार आदि।

  (ii) **द्रव्यवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ अथवा धातु का बोध हो, उसे **द्रव्यवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—पीतल, सोना, ताँबा, दूध, घी, कोयला, चावल, गेहूँ आदि।

2. जिस संज्ञा शब्द से समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—कक्षा, सभा, भीड़, सेना, परिवार आदि।
3. जिन संज्ञा शब्दों से किसी पदार्थ अथवा धातु का बोध दो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—पीतल, सोना, ताँबा, दूध, घी, कोयला आदि।

(ख)	सतीत्व	नेतृत्व	स्त्रीत्व	अपनापन
	स्वत्व	वीरता	हँसी	लड़ाई
(ग)	1. नेतृत्व	2. अपनापन	3. बचपन	
(घ)	मम	व्यक्ति	सती	महँगा
	धोना	बच्चा	नेता	उदार

❑

10. संज्ञा-विकार : लिंग, वचन और कारक

(क) 1. संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं; जैसे—लड़का-लड़की, शेर-शेरनी आदि।

2. **लिंग के भेद**—लिंग के निम्नलिखित दो भेद हैं—
   - **पुल्लिंग**—जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे—मोर, लड़का, शेर, हिरण, पर्वत, कमरा, पत्र, चित्र, तोता, गधा आदि।
   - **स्त्रीलिंग**—जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—मोरनी, लड़की, शेरनी, हिरणी, पहाड़ी, खिड़की, चिट्ठी, तस्वीर, गधी आदि।
3. शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह एक के लिए है अथवा एक से अधिक के लिए, उसे वचन कहते हैं; जैसे—केला-केले, तितली-तितलियाँ आदि।
4. **वचन के भेद**—वचन के निम्नलिखित दो भेद हैं—
   - **एकवचन**—जिस शब्द से किसी एक व्यक्ति, एक वस्तु या पदार्थ का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं;
     जैसे—मनीष **तितली** पकड़ता है।
     सुनीता **केला** खाती है।

- **बहुवचन**—जिस शब्द से अनेक व्यक्तियों, अनेक वस्तुओं अथवा पदार्थों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं;
  जैसे—मनीष **तितलियाँ** पकड़ता है।
  सुनीता **केले** खाती है।

5. क्रिया शब्दों से भी वचन की सरलता से पहचान की जा सकती है; जैसे—

1. मोर नाच रहा है।	2. हाथी पानी पी रहा है।	3. बालक पढ़ेगा।
मोर नाच रहे हैं।	हाथी पानी पी रहे हैं।	बालक पढ़ेंगे।

ऊपर दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्दों से वचन की अर्थात् एकवचन व बहुवचन की पहचान नहीं होती है। इन वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं से एकवचन तथा बहुवचन का पता चलता है; जैसे—

नाच रहा है (क्रिया, एकवचन)	पी रहा है (क्रिया, एकवचन)
नाच रहे हैं (क्रिया, बहुवचन)	पी रहे हैं (क्रिया, बहुवचन)
पढ़ेगा (क्रिया, एकवचन)	पढ़ेंगे (क्रिया, बहुवचन)

- आदरसूचक शब्दों में क्रिया बहुवचन की लगाई जाती है—
  1. अध्यापिका पढ़ा रही हैं। 2. पिताजी फल लाए हैं। 3. आप कहाँ जा रहे हैं?
- कई बार जातिवाचक शब्द एकवचन में बहुवचन का बोध कराते हैं—
  1. मुंबई के केले प्रसिद्ध हैं। 2. नागपुर के संतरे प्रसिद्ध हैं। 3. उसके पास एक लाख रुपये हैं।

6. संज्ञा अथवा सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताने वाले शब्द कारक कहलाते हैं; जैसे—लता **ने** सब्जी खरीदी।
   उसने दुकानदार **को** पैसे दिए।
7. कारक के निम्नलिखित आठ भेद हैं—
   - कर्ता
   - कर्म
   - करण
   - संप्रदान
   - अपादान
   - संबंध
   - अधिकरण
   - संबोधन

(ख) शिष्य	देवा
डिब्बा	नाग
रूपवान	नर-कोयल
(ग) शिवानी	गुणवती
भीलनी	बालिका
मादा भालू	स्वामिनी

(घ) मकान-पुल्लिग | झोपड़ी-स्त्रीलिंग
पैर-पुल्लिग | डंडा-पुल्लिग

(ङ) 1. लड़की 2. चिड़िया 3. खिड़कियाँ
4. समोसे 5. छात्राएँ

(च) 1. चिड़िया—हरी चिड़िया पिंजरे में बंद है।
चिड़ियाँ—शिकारी को देखकर सारी चिड़ियाँ उड़ गयीं।
2. पंखा—मेरे कमरे का पंखा तेज नहीं चलता।
पंखे—गर्मी से बचने के लिए रोहन ने बहुत-से पंखे लगा लिए।
3. छात्र—कक्षा में एक छात्र की तबीयत खराब हो गयी।
छात्रगण—प्रार्थना के बाद सभी छात्रगण कक्षा में आ गए।

(छ) शाखाएँ | गुरुजन
गौएँ | लताएँ
डिबियाँ | चींटियाँ
देवियाँ | नीतियाँ
गधे | कुतियाँ
प्रजाजन | हम

(ज) 1. माँ ने भोजन पकाया। 2. वृक्ष से पत्तियाँ गिरती हैं।
3. उषा ने साबुन से कपड़े धोए। 4. बंदर छत पर बैठा है।

(झ) 1. राम ने पुस्तक पढ़ी। 2. बच्चा सो रहा था।
3. राधिका को पानी चाहिए। 4. गीता रीना से मोटी है।

(ञ) 1. संप्रदान कारक 2. कर्म कारक
3. कर्म कारक 4. संप्रदान कारक

(ट) 1. छत पर मत खेलो। 2. बालक ने गरीब को रोटी दे दी।
3. नेहा के द्वारा पुस्तक को पढ़ा गया। 4. उसे अभी चले जाना है।

❑

11. सर्वनाम

(क) 1. सर्वनाम की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।
संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे—मैं, तुम, हम, हमने, मुझे, वह आा
2. सर्वनाम के छ: भेद हैं—
- पुरुषवाचक सर्वनाम—मैं, तुम
- निश्चयवाचक सर्वनाम—यह मेरा गुलदस्ता है।
ये उसकी पुस्तकें है।
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम—भिखारी को कुछ दे दो।
रमा से कोई मिलने आया है।

◆ संबंधवाचक सर्वनाम—जो पढ़ेगा सो, पास होगा।
जैसा किया है, वैसा भरो।
◆ प्रश्नवाचक सर्वनाम—इतनी अच्छी खीर किसने बनाई?
सेब कौन लेकर आया है।
◆ निजवाचक सर्वनाम—उसने अपने आप सब्जी बनाई थी।
वह खुद ही आ जाएगी।

3. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं—
(i) उत्तम पुरुष (ii) मध्यम पुरुष (iii) अन्य पुरुष

(ख) 1. स्वयं—उसने स्वयं ही अपना गृहकार्य पूरा कर लिया।
2. तुम—तुम कितने दुबले हो गए हो।
3. किसने—उसका पत्र किसने लिखा?

(ग) 1. उसका नाम मुझे नहीं मालूम।
2. हमने उनसे कहा था।
3. किसने दवात चुराई है?

(घ) 1. तुम 2. स्वयं 3. उसने

(ङ)

वे	हम	हमसे
किनको	तुम सब	आपको
उनके लिए	हमारे द्वारा	उनके द्वारा

(च) 1. मुझे 2. मुझसे 3. उससे

❑

12. विशेषण

(क) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।
उदाहरण—रमन ने **ताजे** फल खाए।
मैंने **थोड़ा** दूध पिया।

2. विशेषण के निम्नलिखित चार भेद हैं—
◆ गुणवाचक विशेषण
◆ संख्यावाचक विशेषण
◆ परिमाणवाचक विशेषण
◆ सार्वनामिक अथवा संकेतवाचक विशेषण

3.

परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
ऐसे विशेषण जिनका प्रयोग उन वस्तुओं के साथ होता है जिन्हें केवल नापा-तौला जा सकता है, परिमाणवाचक विशेषण के रूप में जाने जाते हैं; जैसे— 1. **कुछ** सब्जी देना। 2. मैंने **दो लीटर** दूध खरीदा।	ऐसे विशेषण जिनका प्रयोग गिनी जाने वाली वस्तुओं के साथ होता है, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— 1. **कुछ** पुस्तकें लाना। 2. मैंने **दो दर्जन** केले खरीदे।

4.

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
ऐसे किसी सार्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, तो वह सर्वनाम ही रहता है; जैसे— 1. यह कल नहीं आया था। 2. वे दौड़ रहे हैं।	ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग संज्ञा के साथ होता है, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— 1. यह लड़का कल नहीं आया था। 2. वे बालक दौड़ रहे हैं।

(ख) 1. सभी ने मिलकर धार्मिक कार्य के लिए पैसे इकट्ठे किए।
2. शेर मरा नहीं था, बल्कि जीवित था।
3. फ्रांस ने भारत को लड़ाकू विमान भेजे।
4. मण्डप के भीतरी भाग में आग लगी थी।

(ग)

आर्थिक	सामाजिक
नैतिक	दूधवाला
कैसा	ऐसा
घृणित	राष्ट्रीय

(घ)

स्थल	गुण
देश	बाघ
उद्यान	अविष्कार
काँटे	हरी

(ङ) 1. राष्ट्रीय 2. तैराक 3. संचित 4. रेशमी

❑

13. क्रिया

(क) 1. जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं;
जैसे—रीमा **गाती** है।
बच्ची **हँसती** है।

2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद पाए जाते हैं—

- **सकर्मक क्रिया**—वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म लगे तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़े, सकर्मक क्रिया कहलाती हैं; जैसे—लता ने **खाना** खाया। वह **पत्र** लिखता है।
- **अकर्मक क्रिया**—वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म न लगे तथा क्रिया का व्यापार एवं फल दोनों कर्ता पर पड़े, अकर्मक क्रिया कहलाती हैं; जैसे—रमन हँस रहा है। घोड़ा दौड़ रहा है।

3. रचना की दृष्टि से क्रिया के चार भेद हैं—प्रेरणार्थक क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया तथा पूर्वकालिक क्रिया।

(ख) 1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया
3. अकर्मक क्रिया 4. सकर्मक क्रिया
5. अकर्मक क्रिया

(ग) 1. बच्ची को सुला दिया है।
2. गाय बछड़े को दूध पिलाती है।
3. पिताजी मुझे भाई के द्‌वारा बुलवाते हैं।
4. माँ मुझसे कपड़े धुलवाती हैं।
5. वह मजदूर से काम करवाता है।

(घ) 1. सोता है। 2. है। 3. थे।
4. खरीदा। 5. लिखा।

❑

14. क्रिया : काल और वाच्य

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, वह काल कहलाता है।
काल के तीन भेद हैं—
1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल

2. भूतकाल के निम्नलिखित छ: भेद हैं—
(i) सामान्य भूत (ii) आसन्न भूत
(iii) पूर्ण भूत (iv) अपूर्ण भूत
(v) संदिग्ध भूत (vi) हेतुहेतुमद्‌ भूत

3. जहाँ बीते हुए समय में कार्य होने का बोध हो, उसे सामान्य भूत कहते हैं; जैसे—रमन ने पतंग बनाई।
जहाँ निकट भूत में क्रिया की समाप्ति पाई जाए, उसे आसन्न भूत कहते हैं; जैसे—वह अभी आया है।
4. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि लिंग तथा वचन का प्रयोग कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसके अनुसार किया गया है, उसे वाच्य कहते हैं।
5. **वाच्य के भेद**—वाच्य के निम्नलिखित तीन भेद हैं—
   - **कर्तृवाच्य**—जिस वाक्य में क्रिया का रूप कर्ता के लिंग एवं वचन के अनुसार होता है, उसे **कर्तृवाच्य** कहते हैं; जैसे—1. राजीव क्रिकेट खेलता है। 2. श्रीकांत रोटी खाता है।
   - **कर्मवाच्य**—किसी वाक्य में जब क्रिया का रूप कर्ता के रूप के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार हो, तो उसे **कर्मवाच्य** कहते हैं; जैसे—1. सुशीला से फल खरीदे जा रहे हैं। 2. लड़की से सेब खाया जाता है।
   - **भाववाच्य**—जिस वाक्य में क्रिया कर्ता अथवा कर्म के लिंग एवं वचन के अनुसार न होकर स्वयं अपने भाव के अनुसार हो, उसे भाववाच्य कहते हैं; जैसे—1. दादाजी से चला नहीं जाता। 2. मुझसे बोला नहीं जाता। 3. बच्ची से सोया नहीं जाता।

(ख) 1. माताजी बाजार से आई हैं। 2. शायद वे लोग आएँ। 3. बंदरिया नाच रही थी। 4. बद्री आ रहा होगा। 5. आज विद्यालय बंद रहेगा।

(ग) 1. नेहा से पढ़ा नहीं जाता। 2. चमन से रोया जाता है। 3. वृद्ध से चला नहीं जाता। 4. बच्ची से सोया नहीं जाता। 5. उससे हँसा जाता है।

(घ) 1. रोहित से पतंग उड़ाई जाती है। 2. आरती से खेला जा रहा था। 3. मोहित से पुस्तक पढ़ी जाती है। 4. नरेश से फल खाया जाता है। 5. नर्तकी से नृत्य किया जाता है।

(ङ) 1. मैं सोना चाहता हूँ। 2. आपने सुना होगा। 3. क्या तुमने खाना खा लिया? 4. उसके मामाजी आए हैं। 5. रोहित ने मुझे बड़ी गेंद दी।

(च) 1. क्या तुमने खाना खा लिया है? 2. मुझसे उठा नहीं जाता। 3. सेब हमसे खाया नहीं जाता। 4. बद्री को खेत जोत देना चाहिए। 5. नेहा की दादीजी से चला नहीं जाता।

(छ) 1. लिखेंगे 2. खाइए 3. जाएगा 4. मिलेगा 5. देखा

(ज) कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

- क्रिया को अन्य पुरुष एकवचन में कर दिया जाता है एवं कर्ता के साथ 'से' जोड़ दिया जाता है।
- क्रिया को सामान्य भूत में बदल दिया जाता है। इसके अतिरिक्त काल के अनुसार 'जाना' क्रिया का रूप जोड़ दिया जाता है; जैसे—

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
1. वह नहीं चलता है।	उससे चला नहीं जाता।
2. बच्चा नहीं बैठता।	बच्चे से बैठा नहीं जाता।

(झ) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

- कर्तृवाच्य के कर्ता में 'से', 'के द्वारा' अथवा 'द्वारा' जोड़ दिया जाता है।
- इसकी मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया बना दिया जाता है तथा इसके लिंग व वचन को कर्म के अनुसार बदल दिया जाता है।
- 'जाना' क्रिया को कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया के काल के अनुसार मिलाकर मुख्य क्रिया में जोड़ दिया जाता है। इसके लिंग व वचन कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे—

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
1. रेखा गाना गा रही है।	रेखा से गाना गाया जा रहा है।
2. राम पौधा लगाता है।	राम द्वारा पौधा लगाया जाता है।

❏

15. अव्यय : क्रिया-विशेषण

(क) 1. जिस शब्द से क्रिया की विशेषता जानी जाती है, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। उदाहरण—दिनभर, अवश्य, भीतर आदि।

2. जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध जाना जाता है, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं;
जैसे—चार बजे **से पहले** घर पहुँच जाना।
घर **के अन्दर** चोर घुस गए।

3. जो दो शब्दों अथवा पदों, वाक्यांशों और उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं;
जैसे—मोहन **और** दिनेश पढ़ रहे हैं।
तुम जाओगे **या** मार खाओगे।

4. जो शब्द घृणा, विस्मय, शोक, हर्ष, भय, आदि भावों का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

(ख) 1. मन्द-मन्द 2. धीरे 3. महँगे 4. कठोर 5. कम

(ग) के पास-संबंधबोधक—राहुल के पास काली बिल्ली है।
क्रिया-विशेषण—सुभाष के पास बैठना बहुत मुश्किल है।
के विरुद्ध-संबंधबोधक—मैं हरेंद्र के विरुद्ध गवाही नहीं दूँगा।
क्रिया-विशेषण—उनके विरुद्ध लड़ना भी सौभाग्य की बात है।
के बाद-संबंधबोधक—राम के बाद मोहन आया।
क्रिया-विशेषण—आज वह बहुत दिनों बाद आया।
के अंदर-संबंधबोधक—फ्रिज के अंदर सब्जियाँ रखी हैं।
क्रिया-विशेशण—वह अन्दर बैठा है।

(घ) 1. अरे!—अरे! तुम अंदर कैसे आ गए?
2. हाय!—हाय! बीमारी ने इसका क्या हाल कर दिया?
3. वाह!—वाह! क्या खूबसूरत तस्वीर बनाई है?
4. छि!—छि! यहाँ कितनी बदबू है?

(च) 1. यदि—यदि वर्षा हुई तो हम नहीं जा पाएँगे।
2. तो—अगर वह गया तो मैं भी चलूँगा।
3. यद्यपि—यद्यपि वह बहुत गरीब है लेकिन फिर भी ईमानदार है।
4. इसलिए—वह गूँगा है इसलिए नहीं बोल पाता।

❏

16. वाक्य-विचार

(क) 1. पदों के ऐसे पारस्परिक मेल को, जिससे पूर्ण अर्थ का बोध हो, वाक्य कहते हैं। वाक्य के दो खण्ड किए जा सकते हैं—उद्देश्य तथा विधेय
- वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य का कर्ता तथा कर्ता का विस्तार उद्देश्य होते हैं; जैसे—
1. **नमन** पढ़ रहा है। 2. **भौतिकशास्त्री रामप्रकाश** छात्रों को पढ़ा रहे हैं।
- वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ बताया जाता है, वह विधेय कहलाता है; जैसे—1. निर्धन बालक **भीख माँग रहा है**।

(ख) 1. वे अधिक मेहनती नहीं है। क्या वे अधिक मेहनती हैं?
2. शायद वह सो गया।
3. क्या! राधा पत्र पढ़ती है। राधा पत्र पढ़ती है।
4. कमरे से बाहर चले जाओ।

(ग) 1. जैसे ही दिन निकला पक्षी चहचहाने लगे।
2. जैसे ही शाम होगी हम खेलने जायेंगे।
3. जो छात्र कक्षा में प्रथम आया है, उसे मैं जानता हूँ।
4. जब रुपए मिलेंगे तब हम बैट खरीदेंगे।

(घ) 1. परिचालक के सीटी बजाते ही बस चल पड़ी।
2. हम चिड़ियाघर देखने जायेंगे।
3. शाम होते ही बच्चे टी०वी० देखने लगे।
4. रमा के आने पर निशा चली गई।
5. खाना बनाने वाली खाना परोसेगी।
6. रमन ने अलमारी खोलकर कमीज निकाली।

❑

17. विराम-चिह्न

(क) (।) पूर्ण-विराम (?) प्रश्नवाचक चिह्न (;) अर्ध-विराम
(—) निर्देशक चिह्न (!) विस्मयसूचक चिह्न (“ ”) उद्धरण चिह्न

(ख) 1. हमें सुख-दुख, लाभ-हानि की चिंता नहीं करनी चाहिए।
2. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा, “बाँध आधुनिक भारत के मंदिर हैं।”
3. तुम कल कहाँ रह गए थे?
4. वाह! क्या चित्र बनाया है।
5. अरे! तुम दिल्ली नहीं गए।
6. महेश, राधा, चंदा, रेखा और मोनू विद्यालय गए हैं।
7. दादीजी चली गईं; फिर आएँगी।
8. महाभारत किसने लिखी?

❑

18. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

(क) 1. जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, उसे मुहावरा कहते हैं।

(ख) 1. अँगूठा दिखाना (देने से स्पष्ट मना करना) मेरे रुपए माँगने पर रमन ने अँगूठा दिखा दिया।
2. उल्लू बनाना (मूर्ख बनाना) भोले-भाले लोगों को उल्लू बनाना आसान है।
3. खाक छानना (मारे-मारे फिरना) जुए में सारा पैसा लुटाने के बाद रामनाथ दो वक्त की रोटी के लिए खाक छानता फिरता है।
4. गुड़ गोबर एक करना (बात बिगाड़ देना) जब बात बनने वाली थी तभी श्याम ने आकर टोक दिया, सारा मामला गुड़ गोबर होकर रह गया।
5. घुटने टेकना (हार मान लेना) हमें परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकने चाहिए।
6. रंग लाना (प्रभाव दिखाना) नेहा की मेहनत रंग लाई, वह कक्षा में प्रथम आ गई।

7. डूब मरना (बहुत लज्जित होना) इतनी सरल-सी पहेली हल न कर सके, तुम्हें तो डूब मरना चाहिए।
8. बरस पड़ना (क्रोधित होना) पुत्र को आधी रात को घर में घुसते देख पिता उस पर बरस पड़े।

(ग) 1. अंत भले का भला (अच्छे काम का अच्छा परिणाम होता है) रमन, सबके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि अंत भले का भला होता है।
2. जिसकी लाठी उसकी भैंस (बलवान की विजय होती है) नरेंद्र ने अपने पड़ोसी की जमीन बलपूर्वक हथिया ली। किसी ने सच ही कहा है—जिसकी लाठी उसकी भैंस।
3. एक अकेला दो ग्यारह (संगठन में शक्ति होती है) यदि मिलकर काम करोगे तो अवश्य सफल हो जाओगे, क्योंकि एक अकेला, दो ग्यारह।
4. साँच को आँच नहीं (सच्चे मनुष्य को भय नहीं सताता) मैं सच्चा हूँ, मेरे पास सबूत हैं, फिर मैं किसी से कयों डरूँ। साँच को आँच नहीं।
5. मुँह में राम बगल में छुरी (ऊपर से मित्रता, मन से शत्रुता) रोहित से बचकर रहना। वह जैसा दिखता है, वैसा है नहीं। उसके मुँह में राम बगल में छुरी है।
6. विद्यार्थी स्वयं करें।
7. अपनी करनी पार उतरनी (अपने परिश्रम से व्यक्ति सफल होता है) तुम कोशिश करोगे तो नौकरी अवश्य मिलेगी। सुना नहीं तुमने, अपनी करनी पार उतरनी।

❑

19. अपठित गद्यांश

(क) 1. उस दिन दुर्गा पूजा का त्योहार मनाया जा रहा था।
2. मोहल्ले में बड़ा-सा पंडाल लगा था।
3. पंडाल के आगे अनगिनत लोगो की भीड़ जमा थी।
4. पुरोहित जी ने मंत्रों का उच्चारण किया।
5. मेरा प्रिय त्योहार-दुर्गापूजा

(ख) 1. अनुशासन का अर्थ है—अपने आवेगों और शक्तियों को उस व्यवस्था के अधीन करना जो अराजकता का अंत करती है एवं जो अकुशलता और अपव्यय के स्थान पर कुशल और मितव्ययता की स्थापना करती है।
2. मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में चाहे, वह खेल हो या मनोरंजन, घर हो अथवा विद्यालय या फिर सभा या समारोह, सभी जगह अनुशासन के नियमों का पालन करना पड़ता है।
3. मनुष्य की सफलता व जीवन का सुख अनुशासन में निहित है।
4. जिस राष्ट्र, समाज, जाति अथवा समुदाय के लोग अनुशासित जीवन के नियमों का पालन नहीं करते वह राष्ट्र, समाज अथवा जाति पतन की ओर अग्रसर हो जाती है।
5. अनुशासन का महत्त्व

❑

20. कहानी और अनुच्छेद-लेखन

(क) विद्यार्थी स्वयं करें। (ख) विद्यार्थी स्वयं करें।

21. पत्र और निबंध-लेखन

(क) विद्यार्थी स्वयं करें। (ख) विद्यार्थी स्वयं करें

सेमेस्टर-1 अद्‌र्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (ii)
2. (क) सिक्के (ख) रेलगाड़ी (ग) पंचायत (घ) वॉयलिन
   (ङ) सोसाकु कोबायाशी
3. माँ तुम्हारा ऋण बहुत है,
   कर रहा फिर भी निवेदन।
   थाल में लाऊँ सजाकर
   स्वीकार लेना, यह समर्पण।
4. (क) लोग बूढ़े कुत्ते के साथ बड़ा ही बुरा व्यवहार करते थे। उसे बार-बार दुत्कारा-फटकारा जाता था। इस पर भी न भागने पर उसकी झाड़ू और डंडो से पिटाई की जाती थी।
   (ख) कवि देश की धरती के लिए अपना तन-मन जीवन समर्पित करना चाहता है। क्योंकि वह उसकी मातृभूमि है और अपनी मातृभूमि की रक्षा करना हम सबका परम कर्तव्य है।
   (ग) सिंदबाद ने भारत से वापस जाने का कारण हिंदुस्तान की तरक्की बताया।
   (घ) लेखक ने धन की अपेक्षा समय को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है, क्योंकि धन तो आता-जाता रहता है, किंतु समय फिर वापस नहीं आता।
   (ङ) विद्यार्थी स्वयं करें।
5. (क) (v) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i) (ङ) (iii)
6. (क) भूमि, धरा, पृथ्वी (ख) नयन, चक्षु, लोचन
   (ग) अम्बा, मातृ, जननी (घ) नीरज, पंकज, सरोज
   (ङ) कर्ज, उधार, लोन
7. (क) धर्मात्मा (ख) महाशय
   (ग) हरीच्छा (घ) लघूत्तर
8. (क) गज के समान मुख वाला—बहुव्रीहि समास
   (ख) हाथों के लिए कड़ी—तत्पुरुष समास
   (ग) देवों में है जो महान (शिव)—बहुव्रीहि समास
   (घ) रात ही रात में—अव्ययी भाव समास

9\. (क) इत (ख) वती
(ग) इयत (घ) पन

10\. (क) नम्रता (ख) विष
(ग) रात (घ) कठोर

सेमेस्टर-2 वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1\. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iv)
(ङ) (ii)

2\. (क) बेटे को लेकर (ख) घमण्ड (ग) मन्दिर (घ) लंबी
(ङ) विजयी

3\. (क) कविराय, दुख कछु तरहि न हारे।
खटकत है जिय माहिं, कियो जो बिना

(ख) सबको जो है बाँधती
वह हिंदी है,
हर भाषा को सभी बहन जो मानती
(अध्यापक की सहायता से भावार्थ लिखें।)

4\. (क) दौलत सबकी परीक्षा अतिथि की भाँति लेती है।

(ख) निर्धन मित्र की विद्रवत्ता की ख्याति सुनकर उस राज्य के राजा ने अपने दरबार में उसका स्वागत किया और उसकी विद्रवत्ता पर मुग्ध होकर उसे अपना राजमंत्री बना लिया।

(ग) वैज्ञानिकों ने यह सोचकर दूसरा मशीनी मानव नहीं बनाया कि जब पहले वाले ने ऐसा करतब दिखाया है, तो दूसरा न जाने क्या-क्या जुल्म ढाएगा।

(घ) पतझड़ के कोशिश करने पर भी उपवन नहीं मरता है। ऐसा इस प्रकार संभव होता है कि जब-जब पतझड़ आते हैं तब-तब पेड़ों के सारे पत्ते झड़ जाते हैं किंतु पुन: उनमें नए पत्ते आ जाते हैं और उपवन फिर से हरा-भरा हो जाता है। इस प्रकार उसका अंत नहीं होता।

(ङ) 'टेक ऑफ बोर्ड' किसी चीज के लिए एक निर्धारित रेखा है।

5\. (क) (iv) (ख) (v) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (iii)

6\. (क) अस्वीकार (ख) छात्र (ग) बेईमान (घ) शहरी

7\. (क) आर्थिक (ख) सामाजिक (ग) नैतिक (घ) दूधवाला

8\. (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) अकर्मक (घ) सकर्मक

9\. (क) जैसे ही दिन निकला, वैसे ही पक्षी चहचहाने लगे।
(ख) जैसे ही शाम होगी, हम खेलने जाएँगे।
(ग) जो छात्र कक्षा में प्रथम आया है, उसे मैं जानता हूँ।

10\. (क) अँगूठा दिखाना (देने से स्पष्ट मना करना) मेरे रुपए माँगने पर रमन ने अँगूठा दिखा दिया।

(ख) उल्लू बनाना (मूर्ख बनाना) भोले-भाले लोगों को उल्लू बनाना आसान है।

(ग) खाक छानना (मारे-मारे फिरना) जुए में सारा पैसा लुटाने के बाद रामनाथ दो वक्त की रोटी के लिए खाक छानता फिरता है।

❑